भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **भारत की अर्थव्यवस्था किस प्रकार की है?**
   एक मिश्रित अर्थव्यवस्था, जिसमें निजी और सरकारी दोनों की भागीदारी है।
2. **भारत की विशाल जनसंख्या से उत्पन्न होने वाली प्रमुख चुनौती क्या है?**
   बड़ी कार्यबल के बावजूद संसाधनों और बुनियादी ढांचे में कमी।
3. **किस क्षेत्र में पारंपरिक रूप से भारतीय कार्यबल के एक बड़े हिस्से को रोजगार मिला हुआ है?**
   कृषि, हालाँकि सेवाएँ अब सकल घरेलू उत्पाद में अधिक योगदान देती हैं।
4. **भारत में आर्थिक विकास के संबंध में प्रमुख चिंता क्या है?**
   विभिन्न क्षेत्रों में असमान विकास।
5. **अनौपचारिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करता है?**
   यह सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है लेकिन अक्सर विनियमन और कराधान का अभाव होता है।
6. **आर्थिक विकास के बावजूद औसत भारतीय नागरिक के लिए प्रमुख चुनौती क्या है?**
   अन्य देशों की तुलना में प्रति व्यक्ति आय अपेक्षाकृत कम है।
7. **भारत में आर्थिक विकास की वर्तमान स्थिति क्या है?**
   तेजी से बढ़ रहा है (आईएमएफ के अनुसार, 2022 में लगभग 7.2%)
8. **भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की क्या भूमिका है?**
   सेवाओं में वृद्धि के बावजूद, महत्वपूर्ण क्षेत्र कार्यबल के एक बड़े हिस्से को रोजगार देता है और सकल घरेलू उत्पाद में उल्लेखनीय योगदान देता है।
9. **क्या भारत के सभी क्षेत्रों में समान रूप से आर्थिक विकास हो रहा है?**
   नहीं, असमान विकास मौजूद है और कुछ राज्य दूसरों की तुलना में अधिक विकसित हैं।
10. **अनौपचारिक क्षेत्र क्या है और यह कितना बड़ा है?**
    अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा अपंजीकृत व्यवसायों से युक्त है, जो सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 50% होने का अनुमान है।
11. **भारत की प्रति व्यक्ति आय अन्य देशों की तुलना में कैसी है?**
    अपेक्षाकृत कम, जो कई अन्य देशों की तुलना में निम्न औसत जीवन स्तर का संकेत देता है।
12. **क्या भारत में गरीबी एक बड़ी चिंता है?**
    हां, आबादी का एक बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे रहता है।
13. **भारत में सार्वजनिक ऋण की वर्तमान स्थिति क्या है?**
    बुनियादी ढाँचे और सामाजिक कार्यक्रमों में सरकारी निवेश के लिए उच्च चुनौतियाँ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Q1. भारत की विशाल और बढ़ती जनसंख्या का इसके आर्थिक विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करें। इसके द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों और अवसरों दोनों पर चर्चा करें।

उत्तर: भारत की विशाल जनसंख्या, 1.4 अरब से अधिक, इसके आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यह जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है जिन्हें सतत विकास के लिए सावधानीपूर्वक नेविगेशन की आवश्यकता होती है।

चुनौतियाँ:

- **संसाधनों पर दबाव:** एक बड़ी आबादी भोजन, पानी और ऊर्जा जैसे संसाधनों पर दबाव डालती है। इससे कमी और बढ़ती कीमतें हो सकती हैं, जिससे आर्थिक गतिविधि में बाधा आ सकती है।
- **रोज़गार निर्माण:** तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण कार्यबल में नए प्रवेशकों को शामिल करने के लिए निरंतर रोजगार सृजन की आवश्यकता होती है। यह कठिन हो सकता है, जिससे बेरोज़गारी और अल्प-रोज़गार को बढ़ावा मिल सकता है।
- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** परिवहन, आवास और स्वच्छता सहित मौजूदा बुनियादी ढाँचा, बढ़ती आबादी की माँगों के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रहा है। इससे रुकावटें पैदा होती हैं और उत्पादकता में बाधा आती है।
- **सामाजिक मुद्दे:** एक बड़ी आबादी गरीबी, असमानता और अपराध जैसे सामाजिक मुद्दों को बढ़ा सकती है। इससे एक अस्थिर वातावरण बन सकता है जो निवेश और आर्थिक विकास को हतोत्साहित करता है।

अवसर:

- **विशाल श्रम बल:**भारत में श्रम का एक विशाल भंडार है, जो एक महत्वपूर्ण तुलनात्मक लाभ प्रदान करता है। यह आसानी से उपलब्ध कार्यबल की तलाश में विदेशी निवेश को आकर्षित कर सकता है।
- **घरेलू बाजार:**बड़ी आबादी वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक विशाल घरेलू बाजार बनाती है, जिससे घरेलू उत्पादन और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलता है।
- **जनसांख्यिकीय विभाजन:** भारत वर्तमान में जनसांख्यिकीय लाभांश का अनुभव कर रहा है, जहां जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कामकाजी आयु (15-64 वर्ष) में है। इससे बचत, निवेश और आर्थिक विकास में वृद्धि हो सकती है।
- **मानव पूंजी विकास:** शिक्षा और कौशल विकास में निवेश करके, भारत नवाचार और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देकर अपनी बड़ी आबादी को उत्पादक और कुशल कार्यबल में बदल सकता है।

अवसरों का लाभ उठाने और चुनौतियों को कम करने की रणनीतियाँ:

- **बुनियादी ढांचे में निवेश:** बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए परिवहन, बिजली और स्वच्छता जैसे बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करें।
- **कौशल विकास पहल:** नौकरी बाजार की मांगों को पूरा करने और रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कार्यबल को उद्योग-प्रासंगिक कौशल से लैस करने के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों में निवेश करें।
- **परिवार नियोजन और शिक्षा:** जनसंख्या वृद्धि को धीमा करने और लंबे समय में जीवन स्तर में सुधार करने के लिए, विशेष रूप से लड़कियों के लिए परिवार नियोजन पहल और शिक्षा को बढ़ावा देना।
- **शहरीकरण और विकास:** शहरी केंद्रों में उचित बुनियादी ढांचे, स्वच्छता और आर्थिक अवसरों को सुनिश्चित करते हुए बढ़ती आबादी को समायोजित करने के लिए नियोजित शहरीकरण पर ध्यान केंद्रित करें।

निष्कर्ष:

भारत की बड़ी आबादी एक जटिल चुनौती के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण अवसर भी प्रस्तुत करती है। रणनीतिक योजना और निवेश के माध्यम से चुनौतियों का सक्रिय रूप से समाधान करके, भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश को निरंतर आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन में बदल सकता है। कुंजी एक ऐसा वातावरण बनाने में निहित है जो अपनी विशाल आबादी के लिए समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करने के लिए रोजगार सृजन, कौशल विकास और कुशल संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा दे।

Q2. अनौपचारिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनौपचारिक क्षेत्र के फायदे और नुकसान पर चर्चा करें और औपचारिकीकरण को बढ़ावा देने के तरीके सुझाएं।

उत्तर: अनौपचारिक क्षेत्र, जिसमें अपंजीकृत व्यवसाय होते हैं और अक्सर नियमों का अभाव होता है, भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। हालाँकि यह रोजगार सृजन और आय सृजन जैसे लाभ प्रदान करता है, लेकिन इसके नुकसान भी हैं जो आर्थिक विकास और श्रमिक कल्याण में बाधा डालते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र के लाभ:

- **रोज़गार निर्माण:** अनौपचारिक क्षेत्र कार्यबल के एक बड़े हिस्से को अवशोषित करता है, विशेष रूप से वे लोग जिनके पास सीमित कौशल है या जिन्हें औपचारिक क्षेत्र में प्रवेश करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह महत्वपूर्ण रोजगार के अवसर प्रदान करता है और गरीबी उन्मूलन में योगदान देता है।
- कम प्रवेश बाधाएँ:अनौपचारिक क्षेत्र न्यूनतम पूंजी आवश्यकताओं वाले उद्यमियों के लिए अपेक्षाकृत आसान प्रवेश प्रदान करता है। यह अर्थव्यवस्था के भीतर नवाचार और उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देता है।
- **लचीलापन:** अनौपचारिक व्यवसाय अपनी कम कठोर संरचनाओं के कारण बदलती बाजार मांगों के लिए जल्दी से अनुकूलित हो सकते हैं, जिससे उन्हें विशिष्ट बाजारों और स्थानीय जरूरतों को पूरा करने की अनुमति मिलती है।
- **विविधता और जीवंतता:** अनौपचारिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के अनूठे चरित्र में योगदान देता है, जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की पेशकश करता है जो विविध उपभोक्ता प्राथमिकताओं को पूरा करते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र के नुकसान:

- **कम उत्पादकता और मजदूरी:** अनौपचारिक व्यवसायों में अक्सर प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण तक पहुंच की कमी होती है, जिससे उत्पादकता कम होती है और श्रमिकों के लिए वेतन कम होता है।
- **सामाजिक सुरक्षा का अभाव:** अनौपचारिक श्रमिकों को आमतौर पर स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और बेरोजगारी सुरक्षा जैसे लाभों का अभाव होता है, जिससे वे आपात स्थिति के दौरान असुरक्षित हो जाते हैं।
- **कर की चोरी:** अनौपचारिक व्यवसाय अक्सर कर प्रणाली के बाहर संचालित होते हैं, जिससे सरकारी राजस्व की हानि होती है जिसका उपयोग सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए किया जा सकता है।
- **सीमित विकास क्षमता:** अनौपचारिकता औपचारिक ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच को प्रतिबंधित करती है, जिससे अनौपचारिक व्यवसायों की विकास क्षमता में बाधा आती है।

अनौपचारिक क्षेत्र के औपचारिकीकरण को बढ़ावा देना:

- **सरलीकृत विनियम:** अनौपचारिक व्यवसायों के लिए अपने संचालन को औपचारिक बनाना आसान बनाने के लिए नियमों और लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करें।
- **कर प्रोत्साहन:** अनौपचारिक व्यवसायों को औपचारिक क्षेत्र में परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कर छूट और सब्सिडी की पेशकश करें।
- **कौशल विकास कार्यक्रम:** अनौपचारिक क्षेत्र में श्रमिकों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करें, जिससे उन्हें औपचारिक क्षेत्र में भी अधिक रोजगार मिल सके।
- **सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ:** पोर्टेबल सामाजिक सुरक्षा योजनाएं विकसित करें जिनका उपयोग श्रमिकों द्वारा उनकी औपचारिक या अनौपचारिक रोजगार स्थिति की परवाह किए बिना किया जा सके।

- **क्रेडिट तक पहुंच:** अनौपचारिक व्यवसायों के विकास और आधुनिकीकरण में सहायता के लिए ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच की सुविधा प्रदान करना।

निष्कर्ष:

अनौपचारिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन इसकी अनौपचारिकता चुनौतियां पेश करती है। सरलीकृत नियमों, प्रोत्साहनों और सामाजिक सुरक्षा उपायों के संयोजन के माध्यम से औपचारिकता को बढ़ावा देकर, भारत श्रमिकों की भलाई सुनिश्चित करते हुए, कर राजस्व में वृद्धि और अधिक मजबूत और टिकाऊ औपचारिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हुए अनौपचारिक क्षेत्र के लाभों का उपयोग कर सकता है।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR